॥ श्रीः ॥

पूर्तिप्रमोद।

अर्थात्

शृङ्गार रस पूरित समस्या पूर्तियों का संग्रह।



पिलकिछा—जौनपुर निवासी

पण्डित सीताराम शर्म्मा उपाध्याय

रचित।

काशी।

लहरी प्रेस, लाहौरी टोला में मुद्रित।

१९०५ ई.

प्रथम बार १०००] [मूल्य -)